ईश्वर सिद्धान्त के रूप में निमित्तोपादानेश्वरवाद की समीक्षात्मक व्याख्या -

के लिए आवश्यक है। विश्व का अस्तित्व ईश्वर पर निर्भर है तथा ईश्वर विश्व के माध्यम से अपनी अभि-व्यक्ति करता है। अतः हीगेल के अनुसार ईश्वर और विश्व में कालिक संबन्ध नहीं कालिक नित्य संबन्ध है।

बर्गसा :- इनके अनुसार मूलतत्व प्राणशक्ति है और यह प्राणशक्ति ईश्वर है जो सदा परिवर्तनशील एवं विकासशील है। जड़, चेतन, जीव आदि ईश्वर की ही अभिव्यक्तियाँ हैं। ईश्वर पूर्ण स्वतन्त्र, विश्वव्यापी तथा विश्वातीत दोनों है। बर्गसा, हीगेल की तरह विश्व को ईश्वर के लिए अनिवार्य नहीं मानते। हीगेल के अनुसार ईश्वर का स्वरूप चिदात्मक है जबकि बर्गसा के अनुसार ईश्वर जीव-रूप है

शंकर :- निमित्तोपादानेश्वरवाद का सर्वोत्तम उदाहरण शंकर के दर्शन में मिलता है। शंकर के अनुसार मूल सत्ता ब्रह्म निर्गुण, व्यक्तित्वरहित तथा अनन्त है। विश्व व्यावहारिक दृष्टिकोण से सत्य है किन्तु पारमार्थिक दृष्टिकोण से केवल ब्रह्म सत्य है और विश्व मिथ्या है। अज्ञानवश वह वास्तविक दीख पड़ता है। इनके अनुसार ब्रह्म विश्व में व्याप्त रहने पर ईश्वर कहा जाता है और जब वह विश्व के परे रहता है तब उसे ब्रह्म कहा जाता है इसे सच्चिदानन्द भी कहते हैं। अतः विश्व किसी भी स्थिति में ब्रह्म के लिए अनिवार्य नहीं कहा जा सकता।

यह सिद्धान्त कई अर्थों में केवलनिमित्तेश्वरवाद, सर्वेश्वरवाद एवं ईश्वरवाद से अधिक उपयुक्त जान पड़ता है। यह ईश्वर को एक असीम विश्वव्यापी एवं विश्वातीत तथा व्यक्तित्वरहित मानकर कई प्रकार की कठिनाइयों से अपने को बचा लेता है। फिर भी इस सिद्धान्त में निम्न दोष पाये जाते हैं। जो निम्न हैं -

ईश्वर सिद्धान्त के रूप में निमित्तोपादानेश्वरवाद

(i) इस सिद्धान्त के अनुसार पूर्ण चेतना ही परमार्थ सत्ता है। इसी पूर्ण चेतना की अभिव्यक्ति विश्व है। विश्व में चेतन और जड़ एवं अनेक पदार्थ पाए जाते हैं। चेतन से जड़ पदार्थों की उत्पत्ति कैसे हो सकती है? इसका समुचित उत्तर नहीं मिलता है। साथ ही एक ही पूर्ण चेतना से अनेकात्मक विश्व की उत्पत्ति होने का अर्थ है कि मूल सत्ता के गर्भ में ही अनेकता समाविष्ट है जो दोषपूर्ण प्रतीत होता है।

(ii) इसके अनुसार विश्व ईश्वर की आवश्यक अभिव्यक्ति है। विश्व को ईश्वर के लिए आवश्यक मानने पर ईश्वर को पूर्ण नहीं कहा जा सकता। हीगेल के अनुसार ईश्वर अपने को विश्व में अभिव्यक्त किए बिना नहीं रह सकता। ऐसी स्थिति में ईश्वर को पूर्ण स्वतन्त्र भी नहीं कहा जा सकता है।

(iii) यदि विश्व को ईश्वर का आवश्यक परिणाम माना जाए, तो विश्व में नैतिक चेतना के लिए कोई स्थान नहीं रहता। यदि चेतन प्राणियों को स्वतन्त्र माना जाए, तो ईश्वर की असीमता के मार्ग में बाधा पहुँचती है। चेतन प्राणियों में इच्छा स्वातंत्र्य रहने पर ईश्वर सीमित हो जाता है।

(iv) यह सिद्धान्त निराशावाद में परिणत हो जाता है। जब सम्पूर्ण विश्व ईश्वर की आवश्यक अभिव्यक्ति है जैसा हीगेल मानते हैं, तब विश्व में पाये जानेवाले अशुभ, बुराइयाँ एवं दुःख भी ईश्वर के आवश्यक परिणाम हो जाते हैं जिनका नाश संभव नहीं दिखता। ऐसा सोचना निराशावाद का प्रतीक है। साथ ही विश्व में व्याप्त ईश्वर इन अशुभ एवं बुराइयों से ग्रस्त हो जाता है।

उपर्युक्त दोषों के विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि ये सारे दोष पाश्चात्य निमित्तोपादानेश्वरवाद के हैं। शंकर का निमित्तोपादानेश्वरवाद इन दोषों से सर्वथा मुक्त है। यह ईश्वर और विश्व के संबन्ध की उपयुक्त एवं तर्कपूर्ण व्याख्या प्रस्तुत करता है।